

भूगोल

अध्याय-7: अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार



पृष्ठ प्रदेश :-

- वह क्षेत्र जो इसकी सेवा करता है तथा इससे सेवा प्राप्त करता है बन्दरगाह का पृष्ठप्रदेश कहलाता है।
- पृष्ठ प्रदेश की सीमाओं का सीमांकन मुश्किल होता है क्योंकि यह क्षेत्र सुस्थिर नहीं होता।
- अधिकतर मामलों में एक पत्तन का पृष्ठ प्रदेश दूसरे पत्तन के पृष्ठ प्रदेश का अतिव्यापन कर सकता है।

भारत के निर्यात संघटन के बदलते प्रारूप :-

- परंपरागत वस्तुओं के निर्यात में गिरावट आई, यथा काजू, दालों आदि।
- पुष्प कृषि उत्पादों ताजे फलों, समुद्री उत्पादों तथा चीनी आदि के निर्यात में वृद्धि दर्ज गई है।
- वर्ष 2016 – 17 के दौरान विनिर्माण क्षेत्र ने भारत के कुल निर्यात मूल्य में अकेले 73.6 प्रतिशत की भागीदारी अंकित की।
- अयस्क एवं खनिजों के निर्यात में आकस्मिक कमी दर्ज की गई।

भारत के आयात संघटन के बदलते प्रारूप :-

- 1950 एवं 60 के दशक में खाद्यान्नों की गंभिर कमी के कारण खाद्यान्न, पूंजीगत, माल, मशीनरी आयात की प्रमुख वस्तुएँ थी।
- 1970 के दशक में खाद्यान्नों के आयात का स्थान उर्वरक एवं पैट्रों में ले लिया।
- मशीन एवं उपकरण, विशेष स्टील, खाद्य तेल तथा रसायन मुख्य रूप से आयात व्यापार की रचना करते हैं।
- पेट्रोलियम तथा इसके उत्पाद के आयात में तीव्र वृद्धि हुई।
- निर्यात की तुलना में आयात का मूल्य अधिक है।

भारत के व्यापार की दिशा :-

1. भारत के व्यापार की दिशा में रोचक परिवर्तन हुआ है। संयुक्त राज्य अमेरिका जो 2003 – 2004 में भारत का सबसे बड़ा व्यापार साझेदार था 2011 – 2012 में वह खिसक कर तीसरे स्थान पर आ गया।
2. 2016 – 17 में भारत का अधिकतम आयात असियन देशों के साथ है।
3. भारत इसके अतिरिक्त पश्चिम यूरोप के देशों यू. के., बेल्जियम, इटली, फ्राँस स्विटजरलैण्ड आदि के साथ महत्वपूर्ण व्यापारिक सम्बन्ध बनाये हुये हैं।
4. कनाडा, रूस, एशिया व अफ्रीकी देशों के साथ भी भारत के निरन्तर व्यापारिक सम्बंध हैं।
5. भारत के न्यूनतम व्यापारिक संबंध (2016 – 17) अफ्रीका से हैं।

भारत के विदेशी व्यापार की विशेषताएँ :-

- भारत का विदेशी व्यापार सदा ही प्रतिकूल रहा है।
- आयात का मूल्य निर्यात के मूल्य से सदा ही अधिक रहा है। विश्व के सभी देशों के साथ भारत के व्यापारिक संबंध हैं।
- वस्त्र, अयस्क व खनिज, हीरे आभूषण तथा इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएँ भारत के मुख्य निर्यात हैं। पेट्रोलियम हमारे देश का सबसे बड़ा आयात है।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में वायु परिवहन की भूमिका :-

- अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में वायु परिवहन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- वायु परिवहन द्वारा लम्बी दूरी तक ले जाने के लिये उच्च मूल्य वाले या नाशवान सामानों को कम से कम समय में ले जाने व निपटाने में सुविधा होती है।
- हवाई अड्डे :- वर्तमान समय में देश ने 12 अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे तथा 112 घरेलू हवाई अड्डे हैं। जैसे - दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कोलकाता, गोवा आदि।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से देश कैसे लाभ प्राप्त करते हैं :-

- आज की जटिल अर्थव्यवस्था से बड़े से बड़ा राष्ट्र भी पूर्णतया आत्मनिर्भर नहीं हो सकता है। प्रत्येक देश में कुछ वस्तुएँ उसकी आवश्यकता से अधिक हैं तो कुछ वस्तुएँ कम होती हैं।
- इस प्रकार प्रत्येक देश अपनी आवश्यकता से कम वस्तुएँ आयात करता है तथा अधिक वस्तुओं का निर्यात करता है, जिससे सभी देशों की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके।
- किसी देश की आर्थिक उन्नति उसके अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर काफी हद तक निर्भर करती है।

महत्वपूर्ण पत्तन

भारतीय बंदरगाह के साथ कुछ भारतीय बंदरगाह इस प्रकार हैं :-

कांडला पत्तन :-

1. यह बंदरगाह कुच्छ की खाड़ी के प्रमुख पर स्थित है। इस प्रमुख बंदरगाह का मुख्य उद्देश्य देश के पश्चिमी और उत्तर - पश्चिमी बंदरगाहों की जरूरतों को पूरा करना है और मुंबई बंदरगाह पर दबाव को कम करना है।
2. यह बंदरगाह मुख्य रूप से बड़ी मात्रा में पेट्रोलियम और पेट्रोलियम उत्पादों और उर्वरकों को प्राप्त करने के लिए बनाया गया है।
3. कांडला बंदरगाह पर दबाव कम करने के लिए, वाडिनार नामक एक अपतटीय टर्मिनल भी विकसित किया गया है।
4. सीमा के सीमांकन में भ्रम के कारण, एक बंदरगाह का हिंडलैंड दूसरे के साथ ओवरलैप हो सकता है।

मुंबई पत्तन :-

1. यह एक प्राकृतिक बंदरगाह और भारत का सबसे बड़ा बंदरगाह है।
2. इस बंदरगाह का स्थान मध्य पूर्व, भूमध्यसागरीय देशों, उत्तरी अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों से सामान्य मार्गों के करीब है, जहां देश के विदेशी व्यापार प्रमुख हिस्सा होता है।
3. यह बंदरगाह 20 किमी की लंबाई और 54 बर्थ के साथ 6 – 10 किमी की चौड़ाई के साथ एक बड़े क्षेत्र में विस्तारित है और इसमें देश का सबसे बड़ा तेल टर्मिनल है।
4. इस बंदरगाह के मुख्य केंद्र हैं मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तर प्रदेश और राजस्थान के कुछ हिस्से।

जवाहरलाल नेहरू पत्तन :-

यह उपग्रह बंदरगाह न्हावा शेवा में स्थित है। इसे मुंबई बंदरगाह पर दबाव से राहत देने के लिए विकसित किया गया था। यह भारत का सबसे बड़ा कंटेनर पोर्ट है।

मर्मगाओ पत्तन :-

- यह जुआरी मुहाना के प्रवेश द्वार पर स्थित है जो गोवा में एक प्राकृतिक बंदरगाह है। 1961 में जापान को लौह – अयस्क निर्यात को संभालने के लिए इसकी रीमॉडेलिंग के बाद इसे महत्व मिला।
- कोंकण रेलवे के निर्माण ने अपने भीतरी इलाकों का विस्तार किया, उदाहरण के लिए कर्नाटक, गोवा, दक्षिणी महाराष्ट्र अपने भीतरी इलाकों का गठन करते हैं।

न्यू मंगलौर पत्तन :-

- इसका उपयोग मुख्य रूप से लौह – अयस्क और लौह सांद्रता और उर्वरकों, पेट्रोलियम उत्पादों, खाद्य तेलों, कॉफी, चाय, लकड़ी की लुगदी, रतालू, ग्रेनाइट पत्थर, गुड़ आदि के निर्यात के लिए किया जाता है।
- यह कर्नाटक में स्थित है जो इसका प्रमुख केंद्र है।

कोच्चि पत्तन :-

- यह बंदरगाह 'अरब सागर की रानी' के नाम से प्रसिद्ध है।
- यह एक प्राकृतिक बंदरगाह है और वेम्बानद कोयल के सिर पर स्थित है।
- कोच्चि बंदरगाह स्वेज – कोलंबो मार्ग के करीब स्थित है।
- यह केरल, साउथ – कामकट और दक्षिण – पश्चिमी तमिलनाडु की जरूरतों को पूरा करता है।

कोलकाता पत्तन :-

1. यह बंगाल की खाड़ी से 128 किमी अंतर्देशीय हुगली नदी पर स्थित है। यह बंदरगाह अंग्रेजों द्वारा विकसित किया गया था क्योंकि यह कभी ब्रिटिश भारत की राजधानी थी।

2. इस बंदरगाह ने विशाखापट्टनम, पारादीप और उपग्रह बंदरगाह, हल्दिया जैसे अन्य बंदरगाहों को निर्यात के मोड़ के कारण अपना महत्व खो दिया है।
3. यह हुगली नदी में गाद जमा होने की समस्या का भी सामना कर रहा है, जो समुद्र से लिंक को बाधित करता है।
4. इसके भीतरी इलाकों में उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, सिक्किम और पूर्वोत्तर राज्य शामिल हैं।
5. यह हमारे पड़ोसी देश जैसे कि नेपाल और भूटान को भी बंदरगाह की सुविधा प्रदान करता है।

हल्दिया पत्तन :-

1. यह कोलकाता से 105 किमी नीचे की ओर स्थित है।
2. इसका निर्माण कोलकाता बंदरगाह पर भीड़ को कम करने के लिए किया गया है।
3. यह लौह - अयस्क, कोयला, पेट्रोलियम, पेट्रोलियम उत्पादों और उर्वरकों, जूट, जूट उत्पादों, कपास, और यार्न, आदि जैसे बल्क कार्गो को संभालता है।

पारदीप पत्तन :-

1. यह बंदरगाह महानदी डेल्टा में स्थित है और यह कटक से लगभग 100 किमी दूर है।
2. इसका सबसे गहरा बंदरगाह होने का लाभ है, इस प्रकार यह बहुत बड़े जहाजों को संभालने के लिए सबसे उपयुक्त है।
3. यह मुख्य रूप से लौह - अयस्क के बड़े पैमाने पर निर्यात को संभालता है।
4. ओडिशा, छत्तीसगढ़ और झारखंड इसके भीतरी इलाकों का गठन करते हैं।

विशाखापट्टनम पत्तन :-

- यह आंध्र प्रदेश में स्थित एक भूमि पर आधारित बंदरगाह है।
- यह एक चैनल द्वारा समुद्र से जुड़ा हुआ है जो ठोस चट्टान और रेत के माध्यम से काटा जाता है।
- लौह - अयस्क, पेट्रोलियम और सामान्य कार्गो जैसे विभिन्न वस्तुओं को संभालने के लिए एक बाहरी बंदरगाह विकसित किया गया है।
- इस बंदरगाह के लिए आंध्र प्रदेश मुख्य पहाड़ी इलाका है।

चेन्नई पत्तन :-

- चेन्नई का कृत्रिम बंदरगाह पूर्वी तट पर सबसे पुराने बंदरगाहों में से एक है। इसे 1859 में बनाया गया था।
- तट के पास उथले पानी के कारण, यह बड़े जहाजों के लिए उपयुक्त नहीं है।
- तमिलनाडु और पुदुचेरी इसका एक भीतरी इलाका है।

पत्तनों को " अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रवेश द्वार " क्यों कहते हैं ?

1. समुद्री पत्तन अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, इसलिए इन्हें अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रवेश द्वार कहते हैं।
2. पत्तन जहाज के लिए गोदी, सामान, उतारने लादने तथा भंडारण की सुविधाएं प्रदान करते हैं।
3. पत्तन अपने पृष्ठ प्रदेशों से वस्तुएं इकट्ठा करने का काम करते हैं, जहां से उन वस्तुओं को अन्य स्थानों पर भेजा जाता है।